स्रोत

सितम्बर 2001

विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

मूल्य 15 रुपए

सिर का आवर्धित चित्र

ये नन्हे विनाशक

अगरबत्ती का धुआं सुरक्षित नहीं है

सवाल यह है कि भावनाओं को ठेस पहुंचना ज़्यादा खतरनाक है या फेफड़ों को। ऐसा इसलिए कि ताईवान के नेशनल चेंगकुंग विश्वविद्यालय के शोधकर्ता ता चांग लिन इन्हीं दो के बीच चुनाव करने को कह रहे हैं। उनका कहना है कि हम उम्मीद करते हैं कि अगरबत्तियां जलाने से मात्र आध्यात्मिक शान्ति मिले और कोई शारीरिक कष्ट न हो, किन्तु इसमें कैंसर का सम्भावित खतरा है। हम अभी नहीं कह सकते कि यह खतरा कितना गम्भीर है।

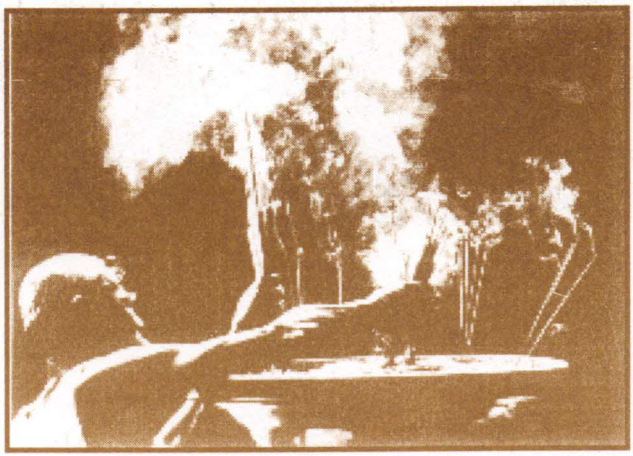

अगरबत्ती की खुशबू शायद आपकी सेहत के लिए हानिकारक है। घरों और पूजा स्थलों पर जलाई जाने वाली अगरबत्तियों का धुआं कई कैंसरकारी रसायनों का मिश्रण होता है।

ताईवान के एक मंदिर में किए गए अध्ययन से पता चला है कि वहां फेफड़ों के कैंसर के लिए ज़िम्मेदार माने जाने वाले रसायनों की मात्रा सामान्य घरों से 40 गुना अधिक थी। ये अगरबत्तियां किसी आम चौराहे पर ट्राफिक प्रदूषण से अधिक प्रदूषण करती हैं।

ताईवान शहर के एक मंदिर के अंदर तथा आसपास से प्राप्त किए गए हवा के नमूनों की तुलना शहर के एक चौराहे से प्राप्त हवा के नमूने से की गई। इस तुलना से पता चला कि मंदिर के अंदर पॉली एरोमैटिक हाईड्रोकार्बन (पी.ए.एच.) की मात्रा बहुत ज़्यादा (19 गुना ज़्यादा) थी। चौराहे की हवा में भी मंदिर से कम पी.ए.एच. थे। शोधकर्ताओं का कहना है कि मंदिर के अंदर लगातार अगरबत्तियां जलती रहती है और हवा की आवाजाही की व्यवस्था बहुत कम होती है। इसलिए यहां की हवा की स्थिति को लेकर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

एक खास पी.ए.एच. बेन्ज़ोपायरीन मंदिर की हवा में बहुत अधिक मात्रा में पाई गई। बेन्ज़ोपायरीन फेफड़ों के कैंसर के लिए ज़िम्मेदार माना जाता है। शोधकर्ताओं ने इस मात्रा की तुलना ऐसे घरों से की जहां लोग धूम्रपान करते हैं। मंदिर की फिज़ां में बेन्ज़ोपायरीन 45 गुना अधिक था।

वैसे मंदिर के अन्दर पी.ए.एच. की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि इस दिन कितने भक्तों ने कितनी अगरबत्तियां जलाई। जिस दिन बड़ी संख्या में भक्त आते हैं, पी.ए.एच. की मात्रा खूब बढ़ जाती है। कभी-कभी तो धुएं के कारण मंदिर के अन्दर देखने में भी दिक्कत होने लगती है।

पी.ए.एच. के अलावा शोधकर्ताओं ने इस बात का भी मापन किया कि मंदिर की हवा में तैरते कणों की मात्रा कितनी है। ये कण धूल, धुएं किसी भी चीज़ के हो सकते हैं। मंदिर के अंदर इन कणों की मात्रा चौराहे से 3 गुना अधिक और मंदिर के बाहर की हवा से 1.1 गुना अधिक पाई गई।

लिन को उम्मीद है कि अब वे सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के साथ मिलकर यह जांच करना चाहेंगे कि मंदिर के कर्मचारियों पर इस प्रदूषण का क्या असर पड़ता है। इसके लिए उन्हें मंदिर कर्मचारियों की सेहत की जांच करनी होगी। तब तक इतना तो कहा ही जा सकता है कि मंदिरों में हवा की आवाजाही की व्यवस्था में सुधार की ज़रूरत है; ताईवान में भी और यहां भी।

(स्रोत फीचर्स)